

प्रथमोऽध्यायः

ब्राह्मपर्व

कथाप्रस्तावना

मंगलाचरणम्

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम्। देवीं सरस्वतीं चैव ततो जयमुदीरयेत्॥ १॥
जयति पराशरसूनुः सत्यवतीहृदयनन्दनो व्यासः। यस्यास्यकमलगलितं वाङ्मयमृतं जगत्पिबति॥ २॥
मूकं करोति वाचालं पङ्क्तुं लङ्घयते गिरिम्। यत्कृपा तमहं वन्दे परमानन्दमाधवम्॥ ३॥
पाराशर्यवचः सरोजममलं गीतार्थगन्धोत्कटं, नानाख्यानककेसरं हरिकथासम्बोधानाबोधितम्।
लोके सज्जनषट्पदैरहरहः पेपीयमानं मुदा, भूयाद्भारतपङ्कजं कलिमलप्रध्वंसि नः श्रेयसे॥ ४॥
यो गोशतं कनकशृङ्गमयं ददाति, विप्राय वेदविदुषे च बहुश्रुताय।
पुण्यां भविष्यसुकथां शृणुयात्समग्रां, पुण्यं समं भवति तस्य च तस्य चैव॥ ५॥
कृत्वा पुराणानि पराशरात्मजः सर्वाण्यनेकानि सुखावहानि।
तत्रात्मसौख्याय भविष्यधर्मान् कलौ युगे भावि लिलेख सर्वम्॥ ६॥
तत्रापि सर्वर्विवरप्रमुखैः पराशराद्यैर्मुनिभिः प्रणीतान्।
स्मृत्युक्तधर्मागमसंहितार्थान् व्यासः समासादवदद्भविष्यम्॥ ७॥
अल्पायुषो लोकजनान्समीक्ष्य विद्याविहीनान्पशुवत्सुचेष्टान्।
तेषां सुखार्थं प्रतिबोधनाय व्यासः पुराणं प्रथितं चकार॥ ८॥

मंगलाचरण

नारायण नरोत्तम, देवी सरस्वती को प्रणाम करके जय नामक महाग्रंथ का पाठ करना चाहिये। पराशरपुत्र सत्यवती के हृदय को आनन्दित करने वाले महर्षि व्यासजी की जय हो, जिनके मुखरूपी कमल से निःसृत अमृतरस पूर्ण वाङ्मय का जगत् पान करता है। जिनकी कृपा से मूक भी वाचाल हो जाता है, लँगड़ा भी गिरि को लाँघने में समर्थ हो जाता है, मैं उन परमानन्द माधव की वन्दना करता हूँ॥ १-३॥

पराशरपुत्र व्यास के वचनरूपी निर्मल सरोवर से उत्पन्न यह कमल अर्थरूपी महान् सुगन्ध से रंजित है। इसके नाना प्रकार के आख्यान इस कमल के सार रूप हैं। यह हरि की कथा से ही विकसित है। इस लोक में सज्जनरूपी षट्पद (भ्रमर) मुदित होकर दिन-रात इसका पान करते रहते हैं। जिसने स्वर्ण से मण्डित शृंगों वाली १०० गौओं को ब्राह्मण को दान किया है तथा अन्य किसी ने इस समय भविष्यपुराण की कथा का श्रवण किया है, उन दोनों के ही पुण्य समान हैं॥ ४-५॥

पराशरपुत्र व्यास ने सुखावह अनेक पुराणों की रचना करके आत्मसन्तोषार्थ कलियुग के सभी धर्मों का लेखन इस पुराण में प्रस्तुत किया है। इसी के साथ ऋषिगण में प्रधान पराशर आदि महर्षिगण द्वारा स्मृतियों में अंकित धर्म को, वेद एवं संहिता के अर्थ के साथ महर्षि व्यास ने इस भविष्यपुराण की रचना संक्षेप में की है। व्यासदेव ने कलिकाल के अल्पायु, विद्याहीन, पशुवत् इन्द्रियों से प्रेरित होकर कर्म करने वाले प्राणियों के दुःख को देखकर उनको प्रतिबोधित करने के लिये इस प्रसिद्ध पुराण की रचना की है॥ ६-८॥

जयति भुवनदीपो भास्करो लोककर्ता, जयति च शितिदेहः शार्ङ्गधन्वा मुरारिः॥
जयति च शशिमौली रुद्रनामाभिधेयो, जयति च स तु देवो भानुमांश्चित्रभानुः॥ १॥
श्रियावृतं तु राजानं शतानीकं महाबलम्। अभिजग्मुर्महात्मानः सर्वे द्रष्टुं महर्षयः॥ २॥
भृगुरत्रिर्वसिष्ठश्च पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः। पराशरस्तथा व्यासः सुमन्तुर्जैमिनिस्तथा॥ ३॥
मुनिः पैलो याज्ञवल्क्यो गौतमस्तु महातपाः। भारद्वाजो मुनिर्धर्मांस्तथा नारदपर्वतौ॥ ४॥
वैशम्पायनो महात्मा शौनकश्च महातपाः। दक्षोऽङ्गिरास्तथा गर्गो गालवश्च महातपाः॥ ५॥

उन सूर्यदेव को जय हो जो भुवनों के प्रदीप, लोककर्ता हैं। उन मुरारीदेव की जय हो जो श्यामवर्ण देह वाले, शार्ङ्गधनुषधारी हैं। शशिमौलि रुद्रदेव की जय हो। वे अग्निदेव जयशील हों, जो कान्तिवाले तथा विचित्र किरणयुक्त हैं। श्री से आवृत महाबली राजा शतानीक की जय हो जिनका अवलोकन करने समस्त मुनि उनके पास गये। उनमें भृगु, अत्रि, वसिष्ठ, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, पराशर, व्यास, सुमन्तु, जैमिनि, पैल, याज्ञवल्क्य, महात्मा गौतम, धीमान्, महर्षि भारद्वाज, नारद, पर्वत मुनि, महात्मा वैशम्पायन, महातपा शौनक, दक्ष, अंगिरा, गर्ग तथा महातपस्वी गालव थे॥ १-५॥

तानागतानृषीन्द्रश्वा शतानीको महीपतिः। विधिवत्पूजयामास अभिगम्य महामतिः॥ ६॥
पुरोहितं पुरस्कृत्य अर्घ्यं गां स्वागतेन च। पूजयित्वा ततः सर्वान्प्रणम्य शिरसा भृशम्॥ ७॥
सुखासीनांस्ततो राजा निरातङ्गान् गतक्लमान्। उवाच प्रणतो भूत्वा बाहुमुद्धृत्य दक्षिणम्॥ ८॥

उन समागत महर्षिगण को देखकर महीपति शतानीक ने आगे बढ़कर उनकी अभ्यर्थना तथा पूजन किया। अपने पुरोहित को आगे रखकर अर्घ्य प्रदान किया तथा गौ आदि द्वारा पूजन करके उनका स्वागत किया। फिर सबको शिर झुकाकर बारम्बार प्रणाम किया। इस स्वागतादि से जब मुनिगण थकान एवं मार्ग के परिश्रम से जनित कष्ट से मुक्त होकर सुख से आसनासीन हो गये, तब प्रणामोपरान्त अपनी दाहिनी भुजा ऊपर उठाकर कहना प्रारंभ किया॥ ६-८॥

इदानीं सफलं जन्म मन्येऽहं भुवि सत्तमाः। आत्मनो द्विजशार्दूला! तथा कीर्तिर्यशो बलम्॥ ९॥
धन्योऽहं पुण्यकर्मा च यतो मां द्रष्टुमागताः। येषां स्मरणमात्रेण युष्माकं पूयते नरः॥ १०॥
श्रोतुमिच्छाम्यहं किञ्चिद्धर्मशास्त्रमनुत्तमम्। आनृशंस्यं समाश्रित्य कथयध्वं महाबलाः॥ ११॥

शतानीक कहते हैं— हे आत्मन्! द्विजश्रेष्ठगण! हे मुनि सत्तमगण! इस पृथिवी पर मेरा यह जन्म सफल हो गया। मेरी कीर्ति-यश-बल सब सफल हो गये। मैं स्वयं को धन्य तथा पुण्यकर्मा मानता हूँ, क्योंकि आज मुझे देखने के लिये आप सब यहाँ आये हैं। आप सबका स्मरण करने मात्र से मनुष्य पवित्र हो जाता है। हे महाबल सम्पन्न मुनिगण! मेरी इच्छा है कि मैं कुछ श्रेष्ठ धर्मशास्त्र को सुनूँ। आप कृपा करके मुझसे कहें॥ ९-११॥

येनाहं धर्मशास्त्रं तु श्रुत्वा गच्छे परां गतिम्। यथागतो मम पिता श्रुत्वा वै भारतं पुरा॥ १२॥
तथोक्तास्तेन राजा वै ब्राह्मणास्ते समन्ततः। समागम्य मिथस्ते तु विमृश्य च भृशं तदा॥ १३॥

मैं चाहता हूँ कि उन पवित्र धर्मशास्त्रों को सुनूँ जिससे उन कथानकों को सुनकर मुझे वह गति मिले जो धर्मशास्त्र श्रवण से मेरे पिता को मिली। राजा का यह वाक्य सुनकर ब्राह्मणगण ने परस्पर सम्यक् रूप से विचार-विमर्श करने के उपरान्त भगवान् व्यास का सम्मान करते हुए राजा से कहा॥ १२-१३॥

पूजयित्वा ततो व्यासमिदं वचनमब्रुवन्। व्यासं प्रसादय विभो! एष ते कथयिष्यति॥ १४॥
तिष्ठत्यस्मिन्महाबाहो! वयं वक्तुं न शक्नुमः। तिष्ठमाने गुरौ शिष्यः कथं वक्ति महामते॥ १५॥
अयं गुरुः सदास्माकं साक्षान्नारायणस्तथा। कृपालुश्च तथा चायं तथा दिव्यविधानवित्॥ १६॥
चतुर्णामपि वर्णानां पावनाय महात्मनाम्। धर्मशास्त्रमनेनोक्तं धर्माद्यैः सुसमन्वितम्॥ १७॥
बिभेति गहनाच्छास्त्राल्लोको व्याधिरिवौषधात्। भारतस्य च विस्तारो मुनिना व्याहृतः स्वयम्॥ १८॥
यथा स्वादु च पथ्यं च दद्यात्स्वं भिषगौषधम्। तथा रम्यं च शास्त्रं च भारतं कृतवान्मुनिः॥ १९॥

ब्राह्मण कहते हैं— हे विभो! आप व्यासदेव को प्रसन्न करें। हे महाबाहो! इनके ही द्वारा धर्मशास्त्र कहा जा सकता है। हे महामते! इनके रहते हम लोग धर्मशास्त्र कैसे कह सकते हैं, क्योंकि गुरु के समक्ष शिष्य कैसे प्रवचन कर सकता है? ये हम सबके गुरु हैं। व्यासदेव साक्षात् नारायण हैं। ये कृपालु हैं तथा दिव्य विधानों के वेत्ता हैं। चतुर्वर्ण को पावन करने हेतु इनके द्वारा समन्वित धर्मशास्त्र तथा व्रतादि एवं नियमों का वर्णन पूर्व में भी किया गया है। गहन शास्त्र तत्त्व से लोग उसी प्रकार से डरते हैं, जिस प्रकार कटु औषधि के सेवन से रोगी डरता है। इन भगवान् व्यास ने भारतशास्त्रसार रूप महाभारत रूपी विस्तृत ग्रन्थ की रचना की है। वैद्य रोगी को स्वादुपथ्य तथा औषधि देता है जो लाभप्रद होती है। उसी प्रकार इन भगवान् व्यास ने रमणीय एवं शास्त्रों पर आधारित महाभारत को रचा है॥१४-१९॥

आस्तिक्यारोहसोपानमेतद् भारतमुच्यते। तच्छ्रुत्वा स्वर्गनरकौ लोकः साक्षादवेक्षते॥ २०॥
 देवतातीर्थतपसां भारतादेव निश्चयः। न जन्यते नास्तिकता तस्य मीमांसकैरपि॥ २१॥
 विष्णौ देवेषु वेदेषु गुरुषु ब्राह्मणेषु च। भक्तिर्भवति कल्याणी भारतादेव धीमताम्॥ २२॥
 धर्मार्थकाममोक्षाणां भारतात्सिद्धिरेव हि। अजिह्यो भारतः पन्था निर्वाणपदगामिनाम्॥ २३॥
 मोक्षधर्मार्थकामानां प्रपञ्चो भारते कृतः। अनित्यतापसन्तप्ता भवन्ति तस्य मुक्तये॥ २४॥
 विपत्तिं भारताच्छ्रुत्वा वृष्णिपाण्डवसम्पदाम्। दुःखावसानाद्वाजेन्द्र! पुण्यं च संश्रयेद्बुधः॥ २५॥
 एवंविधं भारतं वै प्रोक्तं येन महात्मना। सोऽयं नारायणः साक्षात् व्यासरूपी महामुनिः॥ २६॥
 स तेषां वचनं श्रुत्वा प्रतापी यो महीपतिः। प्रसादयामास मुनिं व्यासं शास्त्रविशारदम्॥ २७॥

यह महाभारत आस्तिकता पर आरुढ़ होने तथा उस पर आरोहण करने का सोपान है। इसके श्रवणमात्र से स्वर्ग एवं नरक तत्त्व प्रत्यक्ष हो जाता है। देवता, तीर्थ तथा तपविधान का निर्णय महाभारत से होता है। जो इसे सुनते हैं, उनके मन में मीमांसकगण भी नास्तिकता का बीज वपन नहीं कर सकते। ब्राह्मण तथा धीमान् लोगों के मन में विष्णुदेव, अन्य देवगण, गुरुजन, वेद तथा ब्राह्मणों के प्रति कल्याणप्रदा भक्ति महाभारत को सुनने से ही उदित होती है। धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष भी महाभारत श्रवण से ही प्राप्त हो सकता है। निर्वाण पद पर आरोहणार्थ महाभारत ही ऋजु एवं सरल मार्ग है। इसका कारण है कि धर्म-अर्थ-काम-मोक्ष रूप दुर्लभ तत्त्व की विवेचना महाभारत में ही विद्यमान है। सांसारिक अनित्य सन्ताप से तप्त मानव को महाभारत के अनुशीलन द्वारा ही मुक्ति मिलती है। इस शास्त्र में वर्णित यदुवंशीगण तथा पाण्डवों की अतुलित समृद्धि तथा विपत्ति के प्रसंग को सुनकर व्यक्ति अपनी घोर तथा आसन्न विपत्ति से मुक्त हो जाता है। विद्वानों को चाहिये कि इसका श्रवण करके पुण्य प्राप्त करें। इसे कहने वाले महामुनि साक्षात् नारायण रूप महामुनि व्यास ही हैं। वे महात्मा यहाँ साक्षात् विराजमान हैं। मुनिगण का यह वचन सुनकर प्रतापी महीपति शतानीक ने सर्वशास्त्रविशारद महामुनि व्यासदेव को प्रसन्न करके कहा॥२०-२७॥

शतानीक उवाच

अञ्जलिः शिरसा ब्रह्मन्! कृतोऽयं पादयोस्तव। ब्रूहि मे धर्मशास्त्रं तु येनाहं पूततां ब्रजे॥ २८॥
 समुद्धर भवादस्मात्कीर्तयित्वा कथां शुभाम्। यथा मम पिता पूर्वं कीर्तयित्वा तु भारतम्॥ २९॥

शतानीक कहते हैं— हे ब्रह्मन्! मैं अपनी अंजलि को शिर से लगाकर आपके चरणों में प्रणत हो रहा हूँ। कृपया आप धर्मशास्त्र को कहिये जिससे मुझे पवित्रता प्राप्त हो। कृपया आप शुभ कथाओं को कहकर मेरा उद्धार करिये, जैसे आपने मेरे पिता को महाभारत का उपदेश देकर उनका उद्धार किया था॥ २८-२९॥

व्यास उवाच

तस्यैतद्वचनं श्रुत्वा व्यासो वचनमब्रवीत्। एष शिष्यः सुमन्तुर्मे कथयिष्यति ते प्रभो॥ ३०॥

यदिच्छसि महाबाहो! प्रीतिदं चाद्भुतं शुभम्। श्रव्यं भरतशार्दूल! सर्वपापभयापहम्॥ ३१॥
यथा वैशम्पायनेन पुरा प्रोक्तं पितुस्तव। महाभारतव्याख्यानं ब्रह्महत्याव्यपोहनम्॥ ३२॥

व्यासजी ने राजा का वचन सुना तथा कहने लगे। व्यासजी कहते हैं— हे भरतशार्दूल! राजन्! मेरे शिष्य सुमन्तु तुमसे उन कथाओं को कहेंगे। हे महाबाहो प्रभो! यदि तुम अद्भुत, शुभप्रीतिप्रद, सर्वभयनाशक, महाभारत के आख्यान को सुनना चाहते हो जिसे तुम्हारे पिता को लगी ब्रह्महत्या को दूर करने हेतु वैशम्पायन ने सुनाया था, वैसी ही कथा अब तुम सुमन्तु से सुनो॥ ३०-३२॥

अथ तमृषयः सर्वे राजानमिदमब्रुवन्। साधु प्रोक्तं महाबाहो! व्यासेनामितबुद्धिना॥ ३३॥
सुमन्तुं पृच्छ राजर्षे! सर्वशास्त्रविशारदम्। अस्माकमपि राजेन्द्र! श्रवणे जायते मतिः।

अथ व्यासो महातेजाः सुमन्तुमृषिमब्रवीत्॥ ३४॥

भगवान् व्यास के इस प्रकार से कहने पर सभी ऋषिगण ने राजा से कहा— हे महाबाहो! राजर्षे! अमित बुद्धिशाली व्यासदेव ने उचित कहा है। सर्वशास्त्रविशारद सुमन्तु से आप जिज्ञासा करिये। हे राजेन्द्र! हम लोग भी उस धर्मशास्त्र को सुनना चाहते हैं॥ ३३-३४॥

कथयास्मै कथास्तात! याः श्रुत्वा मोदते नृपः। भारतादिकथानां तु यत्रास्य रमते मनः॥ ३५॥
असावपि महातेजाः श्रुत्वा भावं महामतेः। व्यासस्य द्विजशार्दूल! ऋषीणां चापि सर्वशः॥ ३६॥
चकार वक्तुं स मनस्तस्मै राज्ञे महामतिः। व्यासस्य शासनाद्विप्र! ऋषीणां चैव सर्वशः॥ ३७॥
अथ राजा महातेजा आजमीढो द्विजोत्तमम्। प्रणम्य शिरसात्यर्थं प्रवक्तुमुपचक्रमे॥ ३८॥

अब व्यासदेव ने महातेजस्वी सुमन्तु से कहा— हे तात! अब तुम वह कथा राजा को सुनाओ, जिससे ये नृप मुदित हों। इनकी प्रवृत्ति महाभारतादि की कथा सुनने में विशेष रूप से लगी है। द्विजशार्दूल व्यासदेव तथा ऋषिगण के अभिमत को जानकर परम तेजस्वी सुमन्तु राजा शतानीक से उन कथाओं को कहने हेतु प्रवृत्त हो गये। इस हेतु व्यासदेव तथा ऋषिगण की अनुमति भी उनको मिल गयी थी। अब अजमीढनन्दन अमित तेजस्वी राजा ने सर्वप्रथम उन द्विजवर को प्रणाम करके कहा॥ ३५-३८॥

शतानीक उवाच

पुण्याख्यानं मम ब्रह्मन्! पावनाय प्रकीर्तय। श्रुत्वा यद्ब्राह्मणश्रेष्ठ! मुच्येऽहं सर्वपातकात्॥ ३९॥
शतानीक कहते हैं— हे ब्रह्मन्! आप उन पुण्यमय आख्यानों को कहिये जिसे सुनकर मैं सर्वप्रकार के पापों से मुक्ति पा सकूँ॥ ३९॥

सुमन्तुरुवाच

नानाविधानि शास्त्राणि सन्ति पुण्यानि भारत। यानि श्रुत्वा नरो राजन्! मुच्यते सर्वकिल्बिषैः॥ ४०॥
किमिच्छसि महाबाहो! श्रोतुं यत्त्वां ब्रवीमि वै। भारतादिकथानां तु यासु धर्मादयः स्थिताः॥ ४१॥
सुमन्तु कहते हैं— हे राजन्! महाबाहो! ऐसे अनेक शास्त्र हैं, जिन्हें सुनकर सभी पापों से मुक्ति प्राप्त हो जाती है। हे भारत! महाभारतादि कथाओं में धर्म का उपदेश है। आप किस कथा को सुनना चाहते हैं, वह कहें॥ ४०-४१॥

शतानीक उवाच

मतानि कानि विप्रेन्द्र! धर्मशास्त्राणि सुव्रत!। यानि श्रुत्वा नरो विप्र! मुच्यते सर्वकिल्बिषैः॥ ४२॥
शतानीक कहते हैं—हे सुव्रत! विप्रेन्द्र! ऐसे कौन से धर्मशास्त्र हैं? जिनको सुनकर लोग सभी पापों से मुक्ति पा सकते हैं॥ ४२॥

सुमन्तुरुवाच

श्रूयन्तां धर्मशास्त्राणि मनुर्विष्णुर्यमोऽङ्गिराः। वशिष्ठदक्षसंवर्तशातातपपराशराः॥ ४३॥

आपस्तम्बोऽथ उशना कात्यायनबृहस्पती। गौतमः शङ्खलिखितौ हारीतोऽत्रिरथापि वा॥ ४४॥
एतानि धर्मशास्त्राणि श्रुत्वा ज्ञात्वा च भारत! वृन्दारकपुरं गत्वा मोदते नात्र संशयः॥ ४५॥

सुमन्तु कहते हैं— हे राजन्! हे भारत! अब उन धर्मशास्त्रों को सुनिये, जिनको मनु, विष्णु, यम, अंगिरा, वसिष्ठ, दक्ष, संवर्त, शातातप, पराशर, आपस्तम्ब, उशना, कात्यायन, बृहस्पति, गौतम, शंख, लिखित, हारीत एवं अत्रि आदि ने रचा है। मानव इनका श्रवण करता है तथा मानव देवलोक प्राप्त करके आनन्द की अनुभूति प्राप्त करता है। इसमें सन्देह नहीं है॥ ४३-४५॥

शतानीक उवाच

यान्येतानि त्वयोक्तानि धर्मशास्त्राणि सुव्रत! नेच्छामि श्रोतुं विप्रेन्द्र! श्रुतान्येतानि हि द्विज!॥ ४६॥
त्रयाणामपि वर्णानां प्रोक्तानामपि पण्डितैः। श्रेयसे न तु शूद्राणां तत्र मे वचनं शृणु॥ ४७॥
चतुर्णामिह वर्णानां श्रेयसे यानि सुव्रत! भवन्ति द्विजशार्दूल! श्रुतानि भुवनत्रये॥ ४८॥

विशेषतश्चतुर्थस्य वर्णस्य द्विजसत्तम!॥ ४९॥

ब्राह्मणादिषु वर्णेषु त्रिषु वेदाः प्रकल्पिताः। मन्वादीनि च शास्त्राणि तथाङ्गानि समन्ततः॥ ५०॥

शतानीक कहते हैं— हे सुव्रत विप्रेन्द्र! आपने यहाँ जिन धर्मशास्त्रों की चर्चा की है, उनको मैं पूर्वकाल में सुन चुका हूँ उनको पुनः सुनने की इच्छा नहीं है। इनको पण्डितों ने केवल वर्णत्रय (ब्राह्मण-क्षत्रिय-वैश्य) के ही कल्याणार्थ कहा है। लेकिन इनमें से किसी में भी शूद्रों की श्रेयप्राप्ति हेतु कुछ भी नहीं कहा गया है। हे द्विजश्रेष्ठ! मैं इस सम्बन्ध में आपसे निवेदन करता हूँ। हे सुव्रत! मैं विशेषतः उस शास्त्र को सुनना चाहता हूँ जिसे त्रिभुवन में संसार के चारों वर्णों का हेतु कहा गया है। जो मुख्यतः चतुर्थ वर्ण शूद्र के लिये कल्याणकारी हो, वह सुनना है। ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य—इन तीनों वर्णों हेतु वेद, वेदाङ्ग तथा मनु प्रणीत धर्मशास्त्र कहे गये हैं। हे द्विजश्रेष्ठ! इस विषय में शूद्रगण अत्यन्त दीनवत् ही हैं, क्योंकि उन्हें इन ग्रन्थों को पढ़ने का अधिकार नहीं है। वे इन्हें पढ़ नहीं सकते॥ ४६-५०॥

शूद्राश्चैव भृशं दीनाः प्रतिभान्ति द्विजप्रभो। धर्मार्थकाममोक्षस्य शक्ताः स्युरवने कथम्॥ ५१॥
आगमेन विहीना हि अहो कष्टं मतं मम। कश्चैषामागमः प्रोक्तः पुरा द्विजमनीषिभिः॥

त्रिवर्गप्राप्तये ब्रह्मज्ज्ञेयसे च तथोभयोः॥ ५२॥

हे द्विजप्रभु! शूद्रगण आगम से रहित हैं, अतः उनके धर्म-अर्थ-काम तथा मोक्ष रूप चतुर्वर्ग का हित साधन तथा रक्षण कैसे हो? यह मेरे विचार से कष्टप्रद स्थिति है। शूद्रगण हेतु किस शास्त्र की कल्पना विद्वान् ब्राह्मणगण द्वारा पूर्व काल में की गयी है, जिसके अनुशीलन से ये धर्म-अर्थ-काम की प्राप्ति कर सकें तथा जो इनके लिये इहलोक तथा परलोक में कल्याणप्रद हो॥ ५१-५२॥

सुमन्तुरुवाच

साधुसाधु महाबाहो! शृणु मे परमं वचः। चतुर्णामपि वर्णानां यानि प्रोक्तानि श्रेयसे॥ ५३॥
धर्मशास्त्राणि राजेन्द्र! शृणु तानि नृपोत्तम। विशेषतश्च शूद्राणां पावनानि मनीषिभिः॥ ५४॥
अष्टादशपुराणानि चरितं राघवस्य च। रामस्य कुरुशार्दूल! धर्मकामार्थसिद्धये॥ ५५॥
तथोक्तं भारतं वीर! पाराशर्येण धीमता। वेदार्थं सकलं योज्य धर्मशास्त्राणि च प्रभो!॥ ५६॥
कृपालुना कृतं शास्त्रं चतुर्णामिह श्रेयसे। वर्णानां भवमग्नानां कृतं पोतो ह्यनुत्तमम्॥ ५७॥
अष्टादशपुराणानि अष्टौ व्याकरणानि च। ज्ञात्वा सत्यवतीसूनुश्चक्रे भारतसंहिताम्॥ ५८॥

सुमन्तु कहते हैं— हे महाबाहो! आपने अत्यन्त साधु प्रश्न पूछा है। अब मेरे वचन को सुनें जो चारों वर्णों के लिये श्रेयस्कर है। हे राजेन्द्र! नृपोत्तम! जिन शास्त्रों को मनीषी विद्वानों ने विशेषरूप से शूद्रों के लिये भी पावन कहा है, उनको सुनें। हे कुरुश्रेष्ठ! अष्टादश पुराणों में राघव रामचन्द्र का चरित्र धर्म-अर्थ-काम की सिद्धि प्रदान करता है। हे वीर! हे भारत!

धीसम्पन्न पराशरनन्दन व्यासदेव ने समस्त वेदार्थ तथा धर्मशास्त्र के सारभूत महाभारत की रचना की है। उन कृपालु ने चारों वर्णों के कल्याणार्थ तथा उनको भवसागर में निमग्न होने से त्राण दिलाने हेतु इस उत्तम पोत (नौका) रूपी भारत संहिता की रचना अष्टादश तथा अष्टव्याकरण को भली प्रकार से जानकर की है॥५३-५८॥

यां श्रुत्वा पुरुषो राजन्! मुच्यते ब्रह्महत्याया। प्रथमं प्रोच्यते ब्राह्मं द्वितीयं चैन्द्रमुच्यते॥ ५९॥
याम्यं प्रोक्तं ततो रौद्रं वायव्यं वारुणं तथा। सावित्रं च तथा प्रोक्तमष्टमं वैष्णवं तथा॥ ६०॥
एतानि व्याकरणानि पुराणानि निबोध मे। ब्राह्मं पाद्मं वैष्णवं च शैवं भागवतं तथा॥ ६१॥
तथान्यत्रारदीयं च मार्कण्डेयं च सप्तमम्। आग्नेयमष्टमं वीर भविष्यं नवमं स्मृतम्॥ ६२॥
दशमं ब्रह्मवैवर्तं लैङ्गमेकादशं स्मृतम्। वाराहं द्वादशं प्रोक्तं स्कान्दं चैव त्रयोदशम्॥ ६३॥
चतुर्दशं वामनं च कौर्मं पञ्चदशं स्मृतम्। मात्स्यं च गारुडं चैव ब्रह्माण्डं च ततः परम्॥ ६४॥
एतानि कुरुशार्दूल धर्मशास्त्राणि पण्डितैः। साधारणानि प्रोक्तानि वर्णानां श्रेयसे सदा ॥ ६५॥
चतुर्णामिह राजेन्द्र श्रोतुमर्हाणि सुव्रत। किमिच्छसि महाबाहो श्रोतुमेषां नृपोत्तम॥ ६६॥

हे राजन्! इसे सुनकर व्यक्ति ब्रह्महत्यादि भयानक पापों से मुक्त हो जाता है। आठ व्याकरण इस प्रकार हैं— ब्राह्म, ऐन्द्र, याम्य, रौद्र, वायव्य, वारुण, सावित्र तथा वैष्णव। अब आप पुराणों के नाम सुनें। यथा— ब्राह्म, पाद्म, वैष्णव, शैव, भागवत, नारदीय, मार्कण्डेय, आग्नेय, भविष्य, ब्रह्मवैवर्त, लैङ्ग (लिंग), वाराह, स्कन्द, कौर्म, मात्स्य, गारुड, ब्रह्माण्ड तथा वामन। हे कुरुशार्दूल! पण्डितगण ने चतुर्वर्ण वालों को सदा श्रेय दिलाने के लिये इन धर्मशास्त्रों का प्रणयन किया है। हे महाबाहो! नृपश्रेष्ठ! इनमें से किस धर्मशास्त्र को आप सुनना चाहते हैं॥ ५९-६६॥

शतानीक उवाच

भारतं तु श्रुतं विप्र तातस्याङ्कगतेन तु। रामस्य चरितं चापि श्रुतं ब्रह्मन्समन्ततः॥ ६७॥
पुराणानि च विप्रेन्द्र भविष्यं न तु सुव्रत। पुराणं वद विप्रेन्द्र! भविष्यं कौतुकं हि मे॥ ६८॥

शतानीक कहते हैं— हे विप्र! मैं पिता के अंक में बैठकर महाभारत सुन चुका हूँ। भगवान् श्रीराम का चरित भी सुन चुका हूँ। हे विप्रेन्द्र! हे सुव्रत! अन्य पुराणों को भी मैंने सुना है। लेकिन भविष्यपुराण नहीं सुना। हे विप्रेन्द्र! आप भविष्यपुराण को कहिये। इस सम्बन्ध में मुझे कौतूहल हो रहा है॥६७-६८॥

सुमन्तुरुवाच

साधुसाधु महाबाहो साधु पृष्टोऽस्मि मानद। शृणु मे वदतो राजन् पुराणं नवमं महत्॥ ६९॥
यच्छ्रुत्वा सर्वपापेभ्यो मुच्यते मानवो नृप। अश्वमेधफलं प्राप्य गच्छेद्भानौ न संशयः॥ ७०॥
इदं तु ब्रह्मणा प्रोक्तं धर्मशास्त्रमनुत्तमम्। विदुषा ब्राह्मणेनेदमध्येतव्यं प्रयत्नतः॥ ७१॥
शिष्येभ्यश्चैव वक्तव्यं चातुर्वर्ण्येभ्य एव हि। अध्येतव्यं न चान्येन ब्राह्मणं क्षत्रियं विना॥
श्रोतव्यमेव शूद्रेण नाध्येतव्यं कदाचन॥ ७२॥

सुमन्तु कहते हैं— हे महाबाहो! साधु-साधु! आपने मानद प्रश्न पूछा है। मैं पुराणों में नवम इस विशाल पुराण को कहता हूँ। हे राजन्! इसको सुनने से सभी पापों से मुक्ति मिलती है तथा निःसन्दिग्ध रूप से अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होता है। वह व्यक्ति सूर्यलोक प्राप्त करता है। इस अत्युत्तम धर्मशास्त्र को सर्वप्रथम ब्रह्मा ने कहा था। विद्वान् ब्राह्मणों को प्रयत्नपूर्वक इसका अध्ययन करना चाहिये। हे ब्राह्मण! इसका अध्ययन करके अपने चारों वर्णों के शिष्यों को इसका उपदेश प्रदान करें। लेकिन नियम यह है कि इसका अध्ययन केवल ब्राह्मण एवं क्षत्रिय ही कर सकते हैं। वैश्य तथा शूद्र हेतु इसका अध्ययन निषिद्ध है। शूद्र इसे केवल सुन सकते हैं। इसे वे कदापि न पढ़ें॥६९-७२॥

देवार्चा पुरतः कृत्वा ब्राह्मणैश्च नृपोत्तम। श्रोतव्यमेव शूद्रैश्च तथान्यैश्च द्विजातिभिः॥ ७३॥
 श्रौतं स्मार्तं हि वै धर्मं प्रोक्तमस्मिन्नृपोत्तम। तस्माच्छूद्रैर्विना विप्रात्र श्रोतव्यं कथञ्चन॥ ७४॥
 इदं शास्त्रमधीयानो ब्राह्मणः संशितव्रतः। मनोवाग्देहजैर्नित्यं कर्मदोषैर्न लिप्यते॥ ७५॥
 शृण्वन्ति चापि ये राजन् भक्त्या वै ब्राह्मणादयः। मुच्यन्ते पातकैः सर्वैर्गच्छति च दिवं प्रभो॥ ७६॥
 श्रावयेच्चापि यो विप्रः सर्वान्वर्णानृपोत्तम। स गुरुः प्रोच्यते तात वर्णानामिह सर्वशः॥ ७७॥
 स पूज्यः सर्वकालेषु सर्वैर्वर्णैर्नराधिप। पृथिवीं च तथैवेमां कृत्स्नामेकोऽपि सोऽर्हति ॥ ७८॥

हे नृपोत्तम! सबसे पहले देवपूजन करके तब ब्राह्मण से इस पुराण को सुनना उचित है। द्विजों के साथ शूद्र भी इसे सुन सकता है। हे नृपश्रेष्ठ! इस पुराण में श्रौत तथा स्मार्त धर्म को कहा गया है। अतः शूद्रों को चाहिये कि वे इसे ब्राह्मण से ही सुनें। व्रतशील ब्राह्मण इसका अध्ययन करें। इससे उनको मानसिक, वाचिक तथा शारीरिक पापों से मुक्ति मिलती है। हे राजन्! जो ब्राह्मणादि मनुष्य इसे भक्तिपूर्वक पढ़ते हैं, हे प्रभो! वे सभी पापों से मुक्त होकर दिव्यलोक को प्राप्त करते हैं। हे नृपोत्तम! इस पुराण को जो ब्राह्मण सभी वर्णों को सुनाता है, वह तो सभी वर्णों का गुरु है। हे तात! हे नराधिप! वह सभी वर्णों द्वारा पूजनीय है। ऐसा ब्राह्मण इस अतीव विस्तृत पृथिवी पर एकमात्र योग्य (मोक्ष) पद का अधिकारी है॥ ७३-७८॥

इदं स्वस्त्ययनं श्रेष्ठमिदं बुद्धिविवर्धनम्। इदं यशस्यं सततमिदं निःश्रेयसं परम्॥ ७९॥
 अस्मिन्धर्मोऽखिलेनोक्तो गुणदोषौ च कर्मणाम्। चतुर्णामपि वर्णानामाचारश्चापि शाश्वतः॥ ८०॥
 आचारः प्रथमो धर्मः श्रुत्युक्तश्च नरोत्तम। तस्मादस्मिन्समायुक्तो नित्यं स्यादात्मवान्द्विजः॥ ८१॥
 आचाराद्विच्युतो विप्रो न वेदफलमश्नुते। आचारेण च संयुक्तः सम्पूर्णफलभाक्स्मृतः॥ ८२॥
 एवमाचारतो दृष्ट्वा धर्मस्य मुनयो गतिम्। सर्वस्य तपसो मूलमाचारं जगृहुः परम्॥ ८३॥
 अन्ये च मानवा राजन्नाचारं संश्रिताः सदा। एवमस्मिन्पुराणे तु आचारस्य तु कीर्तनम्॥ ८४॥

यह पुराण बुद्धिवर्धक, श्रेष्ठ तथा निःश्रेयस की प्राप्ति कराने वाला है। इसके पाठ तथा श्रवण से यश तथा परमपद की प्राप्ति होती है। इसमें अखिल धर्मों का वर्णन है। कर्मों का गुणदोष भी इसमें प्रतिपादित है। इसमें चतुर्वर्ण के आचारों का भी वर्णन है, जो शाश्वत हैं। हे नरश्रेष्ठ! आचार सर्वधर्म विहित प्रधान धर्म है। यही श्रुति का भी उपदेश है। आचारयुक्त द्विज आत्मवान् कहा गया है। आचार से च्युत विप्र वेदोक्त फलों को नहीं प्राप्त कर सकता। जो आचार से युक्त है, उसे ही सम्पूर्ण फल की प्राप्ति होती है। मुनिगण ने आचार पालन में ही धर्म की गति को देखकर समस्त तप का मूल तथा परमतत्त्व आचार को ही माना है। हे राजन्! इसीलिये अन्य मानवगण (अन्य धर्म वाले) भी आचार का आश्रय ग्रहण करते हैं। इस पुराण में (मुख्यतः) आचार का ही वर्णन किया गया है॥ ७९-८४॥

वृत्तान्तानि च राजेन्द्र तथा चोक्तानि पण्डितैः। त्रिलोक्यास्तु समुत्पत्तिः संस्कारविधिरुत्तमः॥
 श्रवणं चेतिहासस्य विधानं कथ्यते नृप॥ ८५॥

तथास्मिन्कथ्यते राजन्माहात्म्यं वाचकस्य तु। व्रतचर्याश्रमाचाराः स्नातकस्य परो विधिः॥ ८६॥
 दारादिगमनं चैव विवाहानां च लक्षणम्। पुंसां च लक्षणं राजन्योषितां चात्र कथ्यते॥ ८७॥
 महायज्ञविधानं च शास्त्रकल्पं च शाश्वतम्। पृथिव्या लक्षणं तात देवार्चायाः सुलक्षणम्॥ ८८॥
 वृत्तीनां लक्षणं चैव स्नातकस्य व्रतानि च। भक्ष्याभक्ष्यं च शौचं च द्रव्याणां शुद्धिरेव च॥ ८९॥
 स्त्रीधर्मयोगस्तापस्यं मोक्षः संन्यास एव च। राज्ञश्च धर्मो ह्यखिलः कार्याणां च विनिर्णयः॥ ९०॥
 माहात्म्यं सवितुश्चात्र तीर्थानां च विशाम्पते। नारायणस्य माहात्म्यं तथा रुद्रस्य कथ्यते॥ ९१॥
 महाभाग्यं च विप्राणां माहात्म्यं पुस्तकस्य च। दुर्गादेव्यास्तथा चोक्तं सत्यस्य च महामते॥ ९२॥

हे राजन्! इस पुराण में विद्वानों ने प्रभूत वृत्तान्तों का वर्णन किया है। इसमें तीनों लोकों की उत्पत्ति, उत्तम संस्कारविधि, इतिहास (पुराण) श्रवण विधान कहा है। हे नृप! इसमें पुराण वाचकों की महिमा, व्रतचर्या, आश्रमाचार, स्नातकविधि, स्त्रीगमन, विवाह लक्षण, पुरुष लक्षण व स्त्रीगण के लक्षणों का वर्णन है। हे तात! इसमें महायज्ञ विधान, शाश्वत शास्त्रकल्प, भूमिलक्षण, देवार्चना के सुलक्षण, वृत्ति (आजीविका) के लक्षण, स्नातकों के लिये पालनीय व्रत, भक्ष्य-अभक्ष्य निर्णय, शौच का आचार, द्रव्य-शोधन, स्त्रीधर्म, योग-तप-मोक्ष-संन्यास वर्णन, राजाओं के लिये पालनीय अखिल धर्म, उनके द्वारा किये जाने वाले कार्य का निर्णय भी इस पुराण में प्रतिपादित है। हे विशाम्पति! इस पुराण में सविता की महिमा, तीर्थ महिमा, नारायण महिमा, विप्रगण का महाभाग्य, पुस्तक का माहात्म्य तथा सत्य का माहात्म्य वर्णित है। हे महामते! इस पुराण में दुर्गादेवी की महिमा का भी उल्लेख किया गया है॥८५-९२॥

संक्षिप्तं संविधानं च धर्मं स्त्रीपुंसयोरपि। विभागं धर्मद्यूतं च कथाकानां च शोधनम्॥९३॥
वैश्यशूद्रोपचारं च संकीर्णानां च सम्भवम्। आपद्धर्मं च वर्णानां प्रायश्चित्तविधिं तथा॥९४॥
संध्याविधिं प्रेतशुद्धिं स्नानतर्पणयोर्विधिम्। वैश्वदेवविधिं चापि तथा भोज्यविधिं नृप॥९५॥
लक्षणं दन्तकाष्ठस्य चरणव्यूहमुत्तमम्। संसारगमनं चैव त्रिविधं कर्मसम्भवम्॥९६॥
नैःश्रेयसं कर्मणां च गुणदोषपरीक्षणम्। दाराणां लक्षणं प्रोक्तं तथा पात्रपरीक्षणम्॥९७॥
प्रसूतिं चापि गर्भस्य तथा कर्मफलं नृप। जातिधर्मान्कुलधर्मान्वेदधर्माश्च पार्थिव॥९८॥

इसमें स्त्री तथा पुरुष के पालन करने योग्य धर्म का संक्षिप्त वर्णन है। धर्मद्यूत विभाग, कथक-शोधन, वैश्य-शूद्र हेतु उपचार, संकर वर्णोत्पत्ति, सभी वर्णों हेतु आपत्कालीन धर्म, वर्णों हेतु प्रायश्चित्त विधान, सन्ध्याविधान, प्रेतशुद्धि, स्नानतर्पण विधान, वैश्वदेवविधान, भोजन विधान, दन्तकाष्ठ लक्षण, उत्तम चरण व्यूह जिसमें वैदिक शाखाओं का विशेष वर्णन है, त्रिविध कर्मों का कारण, संसार में जन्म का वर्णन, कर्मों से निःश्रेयस की प्राप्ति, कर्मगत गुण-दोष परीक्षण, स्त्रीगण के लक्षण, पात्रपरीक्षण, गर्भ की प्रसूति का तथा कर्मफल वर्णित हैं। इसमें जातिगत, कुलगत तथा वैदिकधर्म वर्णित हैं॥९३-९८॥

वैतानव्रतिकानां च तथासौ प्रोक्तवान्विभुः। ब्रह्मा कुरुकुलश्रेष्ठ शंकराय महात्मने॥९९॥
शंकरेण तथा विष्णोः कथितं कुरुनन्दन। विष्णुनापि पुनः प्रोक्तं नारदाय महीपते॥१००॥
नारदात्प्राप्तवाञ्छक्रः शक्रादपि पराशरः। पराशरात्ततो व्यासो व्यासादपि मया विभो॥१०१॥

हे कुरुकुल श्रेष्ठ! प्रथमतः वैतानिकों के व्रतों के सम्बन्ध में भगवान् ब्रह्मा ने भगवान् शंकर को उपदेश दिया था। (वैतानिक=यज्ञ करने वाले)। हे कुरुनन्दन! पुनः इसका उपदेश भगवान् शंकर ने विष्णुदेव को प्रदान किया। हे महीपते! विष्णुदेव ने इसे नारद से कहा। नारद से इन्द्र ने, इन्द्र से पराशर ने इस ज्ञान को प्राप्त किया। इसको पराशर ने व्यास से कहा। भगवान् व्यास से इस ज्ञान को मैंने प्राप्त किया॥९९-१०१॥

एवं परम्पराप्राप्त पुराणमिदमुत्तमम्। शृणु त्वमपि राजेन्द्र मत्सकाशात्परं हितम्॥१०२॥
सर्वाण्येव पुराणानि संज्ञेयानि नरर्षभ। द्वादशैव सहस्राणि प्रोक्तानीह मनीषिभिः॥१०३॥
पुनर्वृद्धिं गतानीह आख्यानैर्विविधैर्नृप। यथा स्कान्दं तथा चेदं भविष्यं कुरुनन्दन॥१०४॥

इस प्रकार मुझे यह उत्तम पुराण परम्परा से प्राप्त है। हे राजन्! अब आप मुझसे इस परम हितकारक पुराण को सुनें। हे नरर्षभ! पण्डितगण समस्त पुराण (श्लोक संख्या) १२००० ही हैं। लेकिन कुछ काल पश्चात् विविध आख्यानों के संयुक्त होते रहने से (श्लोक) संख्या बढ़ती गयी। हे कुरुनन्दन! जैसे स्कन्दपुराण में वृद्धि हुई है, तदनुसार भविष्यपुराण भी बढ़ता गया है॥१०२-१०४॥

स्कान्दं शतसहस्रं तु लोकानां ज्ञातमेव हि। भविष्यमेतद्विषिणा लक्षाद्धं संख्यया कृतम्॥ १०५॥
तुच्छुत्वा पुरुषो भक्त्या इदं फलमवाप्नुयात्। ऋद्धिर्वृद्धिस्तथा श्रीश्च भवन्ति तस्य निश्चितम्॥ १०६॥

॥ इति श्रीभविष्यमहापुराणे शतार्थसाहस्र्यां संहितायां ब्राह्मे पर्वणि
कथाप्रस्तावनान्तर्गते प्रथमोऽध्यायः॥ १॥

स्कन्दपुराण की श्लोक संख्या एक लाख है, यह सभी जानते हैं। भविष्यपुराण की श्लोक संख्या ५०,००० कही गयी है। इसे भक्तिपूर्वक सुनकर निश्चित रूप से मनुष्य को ऋद्धि, वृद्धि और श्री की प्राप्ति होती है॥ १०५-१०६॥

॥ श्रीभविष्यमहापुराण में शतार्थ साहस्री नामक संहिता के ब्राह्मपर्व में
कथा प्रस्तावना नामक पहला अध्याय पूर्ण हुआ॥ १॥

★★★